सामाजिक स्तरीकरण
Social Stratification

समाज को एक दूसरे से भिन्न प्रस्थितियों वाले अनेक स्तरों में विभाजित करने वाली प्रक्रिया को सामाजिक स्तरीकरण कहते हैं। इस व्यवस्था में समाज की निर्मायक इकाइयों को उच्च और निम्न स्तर में विभाजित कर दिया जाता है।

डब्लू० मूरे ने स्तरीकरण को परिभाषित करते हुए कहा कि "स्तरीकरण समाज का वह क्रमबद्ध विभाजन है जिसमें सम्पूर्ण समाज को कुछ उच्च और निम्न सामाजिक इकाइयों में विभाजित कर दिया जाता है।"

सामाजिक स्तरीकरण को उसकी विशेषताओं के सन्दर्भ में भी समझा जा सकता है। सामाजिक स्तरीकरण की विशेषताओं का वर्णन डेविस, मूरे ने किया है कि सामाजिक स्तरीकरण एक सामाजिक और सार्वभौमिक प्रक्रिया है। यह मानवीय प्रयत्नों के परिणामस्वरूप विकसित होती है, जिसमें समाज का उदग्र विभाजन होता है। सामाजिक स्तरीकरण की प्रकृति बन्द और खुली दोनो होती है।

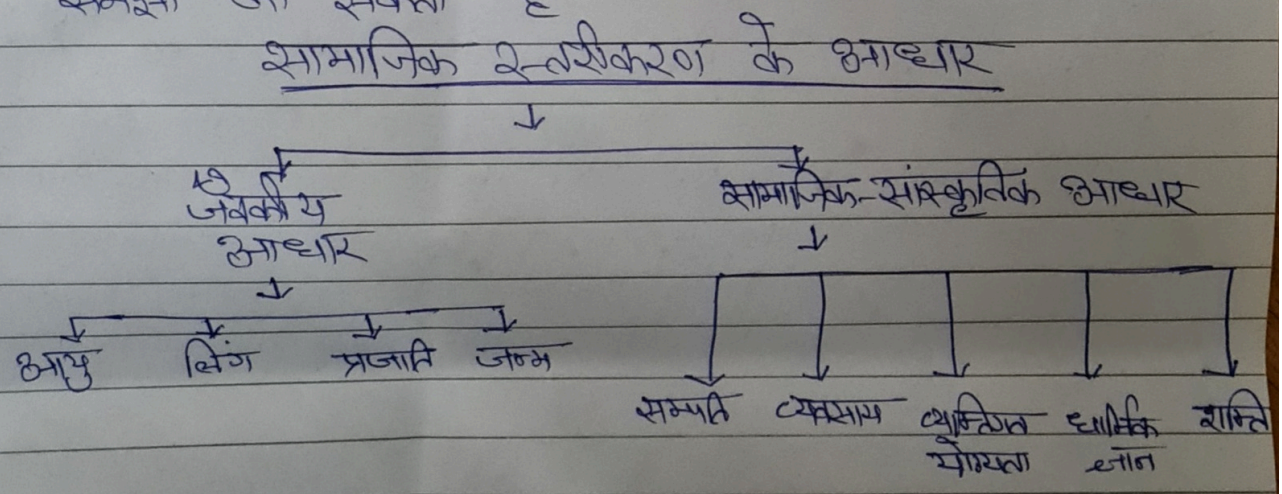

सामाजिक स्तरीकरण के प्रमुखतः दो आधार हैं जैविक आधार एवं सामाजिक-सांस्कृतिक आधार। इसको निम्नांकित चित्र के माध्यम से समझा जा सकता है

बॉटमोर ने सामाजिक स्तरीकरण के चार प्रमुख प्रकारों का उल्लेख किया है ① दास प्रथा – यह स्तरीकरण का प्रारम्भिक रूप था। आज सभी समाजों में मानवतावाद तथा समतावादी मूल्यों का प्रभाव बढ़ने से

दास-प्रथा पूर्णतया समाप्त हो चुकी है।
जागीरदारी प्रथा, जाति-व्यवस्था, वर्ग-व्यवस्था एवं
शक्ति व्यवस्था।
जागीरदारी प्रथा का भी अस्तित्व समाप्त हो चुका है।
हिन्दुओं में जाति-व्यवस्था का स्पष्ट रूप विद्यमान है, वर्ग-
व्यवस्था पश्चिमी समाज की विशेषता है तो शक्ति व्यवस्था
वर्तमान युग की विशेषता है जिसमें कोई भी वह व्यक्ति
~~उच्च स्थान पर~~ समाज में उच्च स्तर का भागीदार होता
है, जिसके पास राजनीतिक प्रभाव होता है।

समाज में सामाजिक स्तरीकरण का
महत्व इसलिए है क्योंकि यह व्यक्तियों की आवश्यकताएं
पूरा करने के साथ ही, अधिक कार्यों को प्रोत्साहन देता
एवं साथ संघर्षों से रक्षा करता है। इससे समाज में
शान्ति का संतुलन बढ़ता है एवं सामाजिक एकीकरण
में वृद्धि होती है। इस महत्व के उपरान्त भी
सामाजिक स्तरीकरण की व्यवस्था से जुड़ी कुछ समस्याएं भी
जैसे कि यह एक विभेदकारी व्यवस्था होने के कारण इससे
अनेक सामाजिक और आर्थिक समस्याएं ~~खड़ी~~ पैदा होकर
सामाजिक जीवन में तनाव पैदा करती है। दूसरा व्यक्तिगत
योग्यता की माप की कोई कसौटी नहीं है, जिसकी
वजह से कई बार योग्य व्यक्तियों के व्यक्तित्व विकास
में बाधा पड़ती है जिससे समाज में विभिन्न प्रकार के
संघर्ष बढ़ने लगते हैं और अलगाववाद में वृद्धि होती है।

इस सारी कमियों के बाद भी दुनिया
का कोई भी समाज स्तरविहीन नहीं होता। सामाजिक
स्तरीकरण की प्रकृति के आधार पर ही समाज विशेष की
व्यवस्था तथा पारस्परिक संबंधों की प्रकृति को समझा जा
सकता है।